

intens. *packen, fassen*: अथेतर् विशे देवा अमरीमृशत् (so lässt sich vermuthen st. ० मृत्त्यत्) ÇAT. Br. 4, 3, 1, 10.

— अति absolut. *übergreifend*: अतिमर्शमेव विकरेत्तथैव प्रगाथाः कल्पते AIT. Br. 6, 28. — Man streiche hiernach den Art. अतिमर्श.

— व्यति absolut. *dass.*: व्यतिमर्श वा विकरेत्पूर्वस्य प्रथमामुत्तरस्य द्वितीयोत्तरस्य प्रथमो पूर्वस्य द्वितीयया ĀCV. ÇR. 8, 2.

— अनु 1) *derb anfassen, packen*: अनु मृत्तोष्ट तन्वं डुरुक्तैः RV. 1, 147, 4. वृक्षपतिरनुमृष्या वृत्स्याधमिव वात् घा चक्र घा गाः 10, 68, 5. तस्या अनुमृष्य योनिमाच्छिन्नत् TS. 6, 1, 3, 6. अनुमर्श गर्भमेष्ट्वै ब्रूयात् ÇAT. Br. 4, 3, 2, 1. KĀTJ. ÇR. 25, 10, 2. — 2) *in Betracht ziehen, berücksichtigen*: भक्ते हृदयमप्येतदनुमृष्योद्धरस्व (so die ed. Bomb.) मे R. 2, 11, 9. — *caus. betasten*: अमयाविनमनुमर्शयति KĀTJ. 25, 9.

— अथ s. अथमर्श.

— अभि *berühren, anfassen, in Berührung bringen*: अग्निर्नाभिर्मृशे तन्वाँर्गुराणाः RV. 2, 10, 5. ध्रुवं ध्रुवो कृविषाभि सौम मृशामसि 10, 173, 6. AV. 3, 24, 6. AIT. Br. 2, 21, 3, 27. 8, 10. TBR. 3, 11, 9, 9. TS. 3, 1, 6, 1. 5, 3, 2, 4. तमद्विरभिर्मृशति ÇAT. Br. 1, 2, 2, 11. 3, 2, 1. वेदिम् 2, 3, 2, 6. 3, 2, 1, 5. उपत्यम् 14, 9, 2, 8. 5, 4, 2, 5. KĀTJ. ÇR. 2, 3, 18. 9, 3, 11. पाणिना GOBH. 2, 3, 19. ĀCV. ÇR. 1, 11. 2, 3, 4, 5. GRHJ. 1, 10, 10. 15, 3, 2, 6, 1. 7. KAUC. 33. 49. 61. 93. हृदयमभिर्मृशेत् KAUSH. UP. 2, 10. अभिमपन् PAÑKAR. 3, 8, 13. पदामिष्ट SUGR. 2, 263, 6. वचसामिष्टः, भोगो यथा पादतलाभिर्मृष्टः MBH. 4, 2106. वृत्रगदामिष्ट *berührt, getroffen* BHĀG. P. 6, 11, 11. अथत्यमभिर्मृष्टम् MBH. 2, 2422 nach dem Schol. so v. a. पैरभिर्मृष्टेभ्यो दोरेभ्यो जातमपत्यम्; *berührt* so v. a. *angetrieben, aufgefordert* BHĀG. P. 7, 8, 49. mod. *anfassen, berühren* RV. 1, 143, 4. शिरसास्य चरणावभिर्मृशमानः MAITRJP. 1, 2. *an sich berühren*: प्राणान् LĀTJ. 2, 3, 6. 11, 21. मुखहृदये ĀCV. ÇR. 3, 6. KAUC. 70. Vgl. अभिमर्श figg. — *caus. berühren lassen* ÇĀNKH. ÇR. 16, 18, 22. — *intens. greifen* so v. a. *verlangen nach* (acc.): अभि प्रियाणि मर्शित्पराणि क्वोरिरेच्छामि संदशे सुमेधाः RV. 3, 38, 3. AIT. Br. 6, 20.

— प्रत्यभि *berühren, anfassen*: प्रत्यभिर्मृशेन्मुखम् GOBH. 3, 8, 18. अथत्यभिर्मृष्ट AIT. Br. 7, 33. — Vgl. प्रत्यभिर्मर्श.

— अथ 1) *berühren, anfassen*: इदं पत्कृत्तः शकुनिर्वामर्शतमिर्हते मुखेन AV. 7, 64, 2. TS. 3, 2, 6, 2. ÇAT. Br. 1, 3, 2, 19. नेत्राष्टा रत्तात्यवमृशान् 7, 1, 20. KĀTJ. ÇR. 8, 1, 25. 10, 8, 7. LĀTJ. 2, 11, 7. mod. KĀTJ. ÇR. 8, 3, 13. absol. ÇAT. Br. 1, 2, 5, 24. 26. 3, 2, 8. तद्वावमृष्य न विवेद darnach tastend KHĀND. UP. 6, 13, 1. Vgl. अनवमर्शम्, अथमर्श, अथमृष्य. — 2) *bedenken, erwägen* BHĀG. P. 2, 7, 36. — *caus.* 1) *berühren lassen* ÇAT. Br. 3, 3, 2, 14. — 2) *betasten* so v. a. *stören, unterbrechen*: रुद्रावमर्शित (पञ्च) BHĀG. P. 4, 7, 48.

— अथव *berühren, anfassen* GOBH. 2, 6, 3. 10, 23.

— प्रत्यव 1) *anfassen* KĀTJ. 13, 4. — 2) *Betrachtungen anstellen*: रवं ० मृष्य BHĀG. P. 3, 27, 16. प्रत्यवामृशम् (so ist mit den Hdschr. zu lesen) DAÇAK. 68, 15. — Vgl. प्रत्यवमर्श figg.

— समव *anfassen* ÇAT. Br. 3, 4, 2, 13. 4, 4, 2, 13. ÇĀNKH. ÇR. 5, 8, 2. Schol. zu KĀTJ. ÇR. 8, 1, 25.

— आ *berühren*: (ताम्) आमृशन्मृगधरो ऽयकैः ÇIC. 9, 34. अनामृष्टं रवेः कौरैः MBH. 3, 11040. शरासनस्यो मुकुराममर्श (consideravit St.) KUMĀRAS.

3, 64. कीचकेन पदामृष्टा (richtiger परामृष्टा ed. Bomb.) MBH. 4, 527. आमृष्टवतीकुरिचन्दाङ्का मन्दारमाला ÇĀK. 161. अलमस्मि जवेनापसर्तुमनामृष्ट एवैभिः *nicht gepackt, nicht festgenommen* DAÇAK. in BENF. Chr. 200, 1. आमृष्टं नः पौरैः पदम् *angegriffen* KUMĀRAS. 2, 31. नीवारपाकादि कडङ्गरूपैरामृष्यते ज्ञानपदेन कञ्चित् *berührt werden* so v. a. *genossen werden* RAGH. 3, 9. — *caus. Betrachtungen anstellen, überlegen*: इत्यामृष्य ÇATR. 14, 199.

— उद् *heraufnehmen, aufrütteln, in Bewegung bringen*: अथम् ÇAT. Br. 6, 3, 2, 12. mod. *herausgreifen, erheben*: उद् पु षो वसो मुक्ते मृशस्व प्रूर राधसे RV. 8, 39, 9. — Vgl. उन्मृष्य.

— परा 1) *berühren, anfassen, ergreifen, packen*: नितितमेतद्भुवि पत्रगास्तु रत्नं समासाद्य परामृशेत् *) MBH. 14, 1684. 2223. भित्तिं परामृष्य MRĀKĪ. 47, 5. 83, 20. परामृशन्कृष्यचलेन पाणिना तदीयमङ्गम् RAGH. 3, 68. ÇĀK. 67, 19. UTTARARĀMAK. 19, 3. KATHĀS. 13, 150. PAÑKĀT. ed. orn. 31, 23. परामृष्टं शुना MBH. 13, 1576. क्लेशकर्मविषाकाशपैरपरामृष्टः KUSUM. 3, 11. विगन्धेनापरामृष्टम् *nicht in Berührung gekommen* SUGR. 1, 136, 13. ग्रहम् *anfassen* ÇĀNKH. ÇR. 18, 21, 8. शयनम् KAUC. 17. विश्वामित्रं परामृष्टमभ्यधावन् *ergreifen, packen* R. 3, 42, 39. माम् — सूतपुत्रः परामृशत् MBH. 4, 673. 738. 3, 5983. MRĀKĪ. 13, 6. दृष्ट्वा सीतां परामृष्टाम् R. 3, 38, 15. 17. MBH. 4, 527 (पदामृष्टा ed. Calc.). राजरोषपरामृष्टा न तिष्ठत्यपराधिनः R. 6, 3, 10. इत्येतां दक्षिणे पाणौ सूतपुत्रः परामृशत् MBH. 4, 456. केशपते 461. 1114. 1272. मूर्धनेषु परामृष्टः HARIV. 4762. परामृष्य पाञ्चाल्या मूर्धजानिमान् MBH. 2, 2374. शिरसस्तत्र कृजेन परामृष्टस्य पाणिना HARIV. 4763. गदां तस्य परामृष्य MBH. 4, 1108. 9, 1857. धनुर्दिव्यम् 6, 2828. वारिसमापूर्णं भृङ्गारम् HARIV. 14243. BHĀTJ. 12, 16. परामृष्टं *angefasst, hart behandelt* AV. 12, 3, 24. कृत्स्नकृत्स्नपरामृष्टां व्याकुलामिव पद्मिनीम् MBH. 3, 2669. वेदीमिव परामृष्टाम् *betastet* so v. a. *entweiht* R. 5, 21, 13. *anrühren ein Weib* so v. a. *ihr Gewalt anthun, entehren* MBH. 3, 11476. 16152. R. 3, 36, 14 (ed. Bomb. 30, 6 richtig परामृशेत्). 5, 36, 17. BHĀTJ. 17, 38. परामृष्टम् ÇĀK. Ch. 123, 3 (vgl. u. मर्श mit परि). परामृष्टा MBH. 5, 7055. HARIV. 11264. R. 4, 13, 46. DAÇAK. in BENF. Chr. 199, 11. — 2) *Etwas berühren* so v. a. *sich beziehen auf, deuten auf, Etwas meinen* NILAK. 8. MÜLLER, SL. 87. ÇĀNKH. zu BRH. ĀR. UP. S. 30. 93. *pass. gemeint sein* 217. Schol. zu P. 6, 2, 43. Schol. zu H. 87. परामृष्यते KULL. zu M. 1, 18. 12, 87. — Vgl. परामर्श figg.

— अनुपरा *packen*: योनिम् ÇAT. Br. 5, 3, 2, 6; vgl. u. अनु.

— उपपरा *dreist anfassen*: उपौप मे परा मृश मा मे दृशाणि मन्यथाः RV. 1, 126, 7.

— प्रतिपरा *dass.* ÇAT. Br. 3, 2, 1, 28.

— परि 1) *betasten, berühren*: अन्धे ज्ञायो परि मृशत्यस्य RV. 10, 34, 4. परिव्ययणम् ÇAT. Br. 3, 7, 1, 13. KĀTJ. ÇR. 6, 3, 5. TS. 6, 3, 2, 3. स्नेहात्परिमर्शताम् R. 2, 10, 25 (9, 5 GORR.). 26. शिखरशतैः परिमृष्टदेवलोकम् (महेन्द्रम्) BHĀTJ. 10, 45. पर्यमृषत् (= पस्पर्श Schol.) HARIV. 2923. पवनैः परिमृष्यमानः *befächelt* SUGR. 2, 484, 18. *anfassen, ergreifen*: खड्गं परिमृशन् (so ist zu lesen) R. 2, 23, 5. पदा मृते परिधं पर्यमृतः MBH. 3, 1369. — 2) *mit dem geistigen Organ* (चित्ता) *befühlen* so v. a. *untersuchen, be-*

*) Die ed. Bomb. des MBH. hat überall richtig श st. ष.